>

Title: Need to construct monuments in the memory of Freedom fighters.

श्री शैलेन्द्र कुमार (कौशाम्बी): माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे अति लोक महत्त्व के विषय पर बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आभारी हूँ। मैं आपके माध्यम से सरकार से कुछ मांग करना चाहूंगा। देश की आजादी में हमारे बहुत से शहीदों ने कुर्बानी दी। हमारे संसदीय क्षेत्र कौशाम्बी में मौलाना लियाकत अली साहब थे, जिन्होंने 21 दिन तक इलाहाबाद में शासन किया था। उन्होंने अंग्रेजों को बंधक बनाया था। उन्होंने अपना हेडक्वार्टर खुसरूबाग रखा था। उसके बाद उन्हें कालापानी की सज़ा हुई। चूंकि वे मौलाना टाईप के थे, इसलिए अंग्रेज भी उनकी बहुत इज्जत करते थे। जब उनका इंतकाल हुआ, तो उनकी मज़ार पोर्ट ब्लेयर में बनायी गयी। मैं अभी कमेटी के टूर पर वहां गया था, तो देखा कि उसकी स्थिति बहुत खराब है। इसके बारे में मैंने वहां के ले. गवर्नर से भी बात की। मैं चाहूंगा कि उनकी मज़ार को अच्छी तरह से बनाया जाए।

सभापति महोदय : संरक्षित किया जाए।

श्री शैलेन्द्र कुमार: ताकि आज़ादी के हमारे सपूत को सच्ची श्रद्धांजलि मिल सके। इसी तरह दुर्गा देवी थीं, जिनको दुर्गा भाभी कहते थे चन्द्रशेखर आजाद और शहीद भगत सिंह। हमारे कौशाम्बी में शहजादपुर की थीं। वह उस समय आंदोलन में क्रांतिकारियों की सूचनाएं देना, उनको आर्म्स पहुंचाना, पैसा देना और लोगों को पनाह देना आदि काम करती थीं। मैं अभी गया था कम्बल वितरण कार्यक्रम में, लखौरी ईंटों का बना हुआ उनका जर्जर घर है। उनकी बहन, जिनकी उम्र लगभग 105 वर्ष होगी, आज भी जीवित हैं। मैं चाहता हूं कि जो ऐसे तमाम सपूत हैं, वीरांगनाएं हैं, जिन्होंने देश की आजादी के लिए काम किया है, कम से कम उनके घरों को स्मारक के रूप में बनाया जाए, उनके कृत्य एवं इतिहास को लिखा जाए ताकि आने वाली पीढ़ी उससे सबक ले।

दूसरे, वहां पर कड़ाधाम है, जहां पर संत मलूक दास रहते थे। उनकी एक कहावत है :

> "अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काज। संत मलूका कह गए सबके दाता राम।।"

उनका भी स्मारक वहां है, जो बहुत जर्जर हालत में है। मैं आपके माध्यम से सरकार से कहना चाहूंगा कि बौद्ध सर्किट में भी अभी तक कौशाम्बी को नहीं जोड़ा गया है जहां पर बौद्ध एवं जैन लोगों के स्थान हैं। ऐसे तमाम स्थानों को, जो धार्मिक एवं एतिहासिक स्थान हैं, हमारे देश के ऐसे सपूत जो आजादी के लड़ाई में बलिदान हुए हैं, उनके स्मारकों को बनाया जाए, उनको संरक्षित किया जाए और उनके नाम पर योजनाएं चलाई जाएं। मैंने सुना है, रेल बजट में माननीय रेल मंत्री जी कह रहे थे कि शहीदों के नाम से रेलगाड़ियां चलें, तो मेरे ख्याल से ऐसा करना बहुत अच्छा होगा। इन्हीं बातों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

श्री विष्णु पद राय (अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह): सभापति महोदय, मुझे एक बात कहने का मौका दीजिए।...(व्यवधान)

सभापति महोदय : नहीं, अभी आप बैठ जाइए।